छहाड़ी गायन शैली का ऐतिहासिक एवं सांगीतिक अध्ययन

बिन्नी चन्द
विद्यावाचस्पति शोधार्थी, संगीत विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल शिमला

सार

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यहां पर प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार की गायन शैलियां प्रचार में रही है जिसमें से एक है ''छहाड़ी'' गायन शैली। छहाड़ी गायन शैली को हिमाचल प्रदेश के ज़िला शिमला के रामपुर बुशैहर में गाया जाता है। यह शैली देवी–देवताओं से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत देवी–देवताओं से सम्बन्धित गाथा गीतों को गाया जाता है। इस गायन शैली को लोग अति प्राचीन काल से गाते आ रहे हैं लेकिन आधुनिक काल में यह गायन शैली लुप्त होने की कागार पर है। नई पीढ़ी इस शैली को अपनाने में असमर्थ सी दिख रही है क्योंकि वो पाश्चात्यता की ओर अधिक रूख कर रही है। पाश्चात्यता के प्रभाव से आज की पीढ़ी अपनी पुरातन विधाओं को भूलती नज़र आ रही है। इसलिए इस विषय पर शोध की बहुत आवश्यकता है तकि इसे भविष्य के लिए संग्रहित किया जा सके। छहाड़ी गायन शैली का विकास भी मानव जाति के विकास के साथ ही होता रहा है। छहाड़ी शब्द का अर्थ छोड़ने से माना जाता है। जिस प्रकार यह विधा एक पीढ़ी ने सीखी और उसके उपरान्त उन से उनकी अगली पीढ़ी ने सीखी इसी प्रकार यह विधा आगे से आगे बढ़ती गई और युगों–युगों से चली आ रही यह गायन शैली आज भी कहीं–कहीं किंचित मात्रा में विशेष अवसरों पर गाई जा रही है।

भूमिका

भारतवर्ष के उत्तर दिशा में बसा हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक व भौगोलिक दृष्टि से अपनी एक अलग ही पहचान व महत्व है। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सांस्कृतिक परिदृश्य में हिमाचल प्रदेश का विशेष महत्व है। वैदिक तथा पौराणिक काल में यह क्षेत्र विभिन्न सांस्कृतिक व अध्यात्मिक परम्पराओं का प्रमुख केन्द्र रहा है। हिमाचल प्रदेश का निर्माण 15 अप्रैल 1948 ई0 में हुआ। इससे पूर्व यह पश्चिमी हिमालय के रूप में जाना जाता था। हिमाचल प्रदेश देवी–देवताओं तथा अनेक ऋषि मुनियों की तपो भूमि रही है। जिसके कारण आज इसे समूचे भारतवर्ष में इसे 'देवभूमि' के रूप में जाना जाता है।

हिमाचल प्रदेश को प्रशासनिक सुविधा के लिए बारह ज़िलों में विभाजित किया गया है। जिसमें से एक ''ज़िला शिमला'' भी है जोकि हिमाचल प्रदेश की राजधानी भी है। ज़िला शिमला का सम्पूर्ण क्षेत्र सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अपना एक अलग ही अस्तित्व रखता है। हिमाचल प्रदेश का शिमला ज़िला अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं रमणीक स्थल है। भौगोलिक दृष्टि से शिमला ज़िला 30° 45′ से 31° 44′ उतरी अक्षांश से लेकर 77° 00′ से 78° 00′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।''[1] ज़िला शिमला की सीमाऐं उत्तर में मण्डी, कुल्लू, किन्नौर दक्षिण में सिरमौर और सोलन, पूर्व में उतराखण्ड तथा पश्चिम में सोलन से लगती है। द वन्डर लैंड हिमाचल प्रदेश के अनुसार, ''शिमला समुद्र तल से करीब 7262 फुट (2421 मी0) की ऊंचाई पर स्थित है। इस ज़िला का क्षेत्रफल 5131 वर्ग किलो मीटर है जो सम्पूर्ण हिमाचल का 9.22 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के अनुसार इस जनपद का सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश में छठा स्थान है। शिमला जनपद को 12 तहसीलों में विभाजित किया है। जिसमें से रामपुर बुशहर भी एक तहसील है जो हिमालय के भीतरी क्षेत्रों की गोद में बसा एक सुन्दर मन मोहक पर्यटन स्थल है। सतलुज नदी के दोनों ओर फैली बुशहर घाटी हिमालय की खूबसूरत घाटियों में से एक है जो न केवल

1 रूप शर्मा, अन्धकार से प्रकाश की ओर, पृ0–713

सेब के बागों, नागर व पहाड़ी शैली में बने मन्दिरों के लिए ही प्रसिद्ध है बल्कि लोक संगीत एवं लोक नृत्य के लिए भी जाना जाता है।

रामपुर बुशहर राजा रामसिंह द्वारा बसाई गई एक रमणीय स्थली है। इसके पूर्व में शिमला, रोहडू, पश्चिम में कुल्लू, उत्तर में जनजातीय क्षेत्र किन्नौर और दक्षिण में शिमला के क्षेत्र स्थित है। इसका क्षेत्रफल 84858 हैक्टेयर है। यह सतलुज नदी जो कि मानसरोवर तिब्बत से निकलती है, के किनारे बस्सा एक सुन्दर कस्बा है, जिसकी समुद्रतल से ऊँचाई लगभग 1005 मी0 है।

रामपुर बुशहर के अधिकतर लोग गांवों में रहते हैं। गांवों के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि, पशुपालन व बागवानी है। यहां पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों के लोग रहते हैं। यहां के लोगों का रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा तथा पहनावा साधारण ही है। यहां के लोग मेहनती और भोले–भाले है और साधारण जीवन व्यतीत करते है। मनोरंजन के लिए यहां पर लोकगीतों का बहुत ही महत्त्व है। यहां पर विभिन्न प्रकार के लोक गीतों का प्रचलन है जिसमें से एक छहाड़ी गायन शैली भी है। इस छहाड़ी गायन शैली का प्रचलन रामपुर बुशहर के साथ–साथ अन्य साथ लगते क्षेत्रों में भी देखने को मिलता है।

प्रस्तुत शोध को क्रियान्वित करने के लिए जिस प्रकार की शोध प्रविधि का वर्णन किया गया है उनमें सर्वप्रथम लिखित सामग्री के लिए पुस्तकालयों में जाकर विषय सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन और पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन करके विषय संबंधी सामग्री को एकत्रित करके इस शोध पत्र के कार्य को पूरा किया गया है।

इसी प्रकार विषय से सम्बन्धि क्षेत्रों में जाकर इस विषय से सम्बन्धित क्रियात्मक जानकारी वहाँ के लोगों से तथा कलाकारों से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त की गई है और उसे स्वरलिपिवद्ध करके इस शोध पत्र का हिस्स बनाया गया है जिसके लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों का उपयोग भी किया गया है।

छहाड़ी का शब्दिक अर्थ

''स्थानीय किवदन्तीयों के अनुसार ''छहाड़ी'' शब्द का शाब्दिक अर्थ ''छोड़ने'' से माना जाता है। कहा जाता है कि पुर्वजों की धरोहर जो हमारे पास मौखिक रूप से विद्यमान है, जिसे लोग पीढ़ी–दर–पीढ़ी गाते आ रहें है अर्थात एक पीढ़ी ने छोड़ा तो दूसरी पीढ़ी ने उसे गाना शुरू किया और इस शैली को संजोय रखा। छहाड़ी शब्द लोक भाषा का शब्द है। ऐसा मान जाता है कि 'छहाड़ी' शब्द 'छोड़ना' शब्द का अपभ्रंश रूप है, जिसका सृजन इस धरती पर मानव जाति के निर्माण के साथ ही हुआ माना जाता है। छहाड़ी को लोक भाषा में कई नामों से जाना जाता है जैसे :– छहाड़ी, छैड़ी और छाओड़ी इत्यादि।''[1]

'छहाड़ी' गायन शैली बहुत ही प्राचीन एवं पारम्पारिक है। यह गाथात्मक रूप से गाई जाती है। जिसमें देवी–देवताओं की गाथा और स्तुति का वर्णन किया जाता है। इसका प्रचलन मानव जाति द्वारा इस धरती पर जन्म लेने के साथ ही माना जाता है। 'छहाड़ी मुख्य रूप से गाथाओं के गेय रूप का नाम है। जब किसी देवी–देवताओं की गाथाओं को गेय रूप दिया जाता है तब उसे 'छहाड़ी कहकर पुकारा जाता है। 'छहाड़ी' मूल रूप से एक लोक गायन शैली है जो कि युगों–युगों से चली आ रही है जैसे–

1 प्रेम लाल वर्मा जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांकः–20.06.2016

शिव से संबंधित, विष्णु से संबंधित, रामायण काल, माहाभारत काल, अन्य देवता तथा स्थानीय देवी–देवताओं से संबंधित छहाड़ीयां है जिसे देवी–देवताओं की स्तुति में गाया जाता है और मेलें, त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों एवं किसी भी कार्यक्रमों में इसे मनोरंजन के लिए भी गाया जाता है। कुछ एक छहाड़ीयां ऐसी है जो हर समय नहीं गाई जाती है वो केवल विशेष धार्मिक अनुष्ठाना के अवसर पर गाई जाती हैं जैसे विष्णु भागवान की 'छहाड़ी' को उन्हीं के जागरण (परैशराच) में ही गाया जाता है। इसके अलावा गाँव के किसी देवता की 'छहाड़ी' को उस देवता के नाम पर लगने वाले मेले अथवा अन्य अवसरों पर जब देवता नाचते है उस समय गाई जाती हैं और बाकी कोई भी 'छहाड़ी' को किसी भी अवसर पर मनोरंजन के लिए गाया जाता है।

छहाड़ी गायन का इतिहास

''स्थानीय किवदन्तियों के अनुसार संसार जब अन्धकारमय था, धरती पर पानी के अलावा कुछ भी नहीं था। पानी का तालाब था, हूँकार था, हूँकार में कोई राजा नहीं था और कोई आदमी नहीं थे। तब भगवान विष्णु पैदा हुए। चारों दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) से बेरहम हवा चली और वो हवा पानी के तालाब से टकराई। हवा और पानी दोनों में कौन बड़ा इस बात पर झगड़ा शुरू हो गया। हवा बोले मैं बड़ी और पानी बोले मैं बड़ा। हवा ने सोचा अच्छा तू बड़ा बनता है; तभी एक तरफ से ज़ोरदार हवा चली और पानी को दूसरी तरफ ढाल दिया, दूसरी तरफ से हवा चली पानी को विपरीत दिशा में ढाल दिया। इसी प्रकार हवा ने पानी को चारों दिशाओं में फैंक दिया और कहा अब बोल कौन बड़ा तू की मैं। पानी को इधर–उधर फैंकने से तालाब आधा हो गाया तब पानी ने कहा कि ठीक है तू भी बड़ी और मैं भी बड़ा और दोनों में संजोग हो गया। जब उन दोनों का झगड़ा तय हो गया तो फिर से हवा चली और वह तालाब अर्थात सारा पानी जम गया, पानी की बर्फ बन गई जिसे लिंग कहा गया और ये गाने में भी आता है:–

पाणी सौरे लिंगा ज़र्मो लिंगा देवा–2
लिंगा फूटेअ पिण्डे ज़र्मे पिण्ड देवा–2
पिण्डी फूटेअ देवा ज़र्मो भगवाना.....

इसी लिंग से भगवान विष्णु और शिव पैदा हुए। विष्णु भगवान कमल के फूल से पैदा हुए। पिण्डी से कमल और कमल से विष्णु पैदा हुए। भगवान शिव का जन्म अण्डे में से हुआ है। तालाब जमा हुआ था। उस तालाब के ऊपर एक अण्डा तैर रहा था। तालाब के अनेकों दैत्य उस अण्डे को पकड़कर खाना चाहते थे लेकिन अण्डा उनकी पहुंच से दूर हो रहा था। भगवान विष्णु सोचते है कि अब संसार की रचना कैसे की जाए। तो सोचते सोचते उन्हें पसीना आ गया। उन्होंने पीसने को अपने हाथों से पौंछा और उस पसीने को तालाब में फैंक दिया। उस पसीने से शक्ति(नारी) पैदा हुई। वह शक्ति पैदा होने के पश्चात् भगवान विष्णु के पास आई और कहने लगी हे प्रभु! आपने मुझे पैदा तो कर दिया लेकिन मेरा साथी कौन होगा। विष्णु ने कहा, शान्ति रखो साथी भी हो जाएगा। विष्णु ने कहा तालाब में जो अण्डा तैर रहा है उसे पकड़ों उसमें तुम्हारा साथी होगा। जैसे ही शक्ति ने यह सुना वह झट से तालाब में गई और उसने उस अण्डे को पकडकर तोड़ा और उस अण्डे में से भगवान शिव पैदा हुए। पैदा होने के पश्चात् शिव जी उस शक्ति के पांव पर पड़ गए हे माँ! आपने मुझे पैदा किया, उस अण्डे में से मुक्त किया। इस पर शक्ति ने कहा ये क्या कह रहे हो आप, आप तो मेरे साथी हो। इस पर शिव ने कहा मैं आपका साथी कैसे हो सकता हूँ, आपने मुझे एक प्रकार से जन्म दिया है आप तो मेरी

माता के समान हो। लेकिन शक्ति नहीं मानतीं है और दोनों भगवान विष्णु के पास पहुंचते है। उन्हें सुनने के बाद विष्णु सोचते हैं कि बात तो तुम्हारी दोनों की सही है तो मैं आपका फैसला कैसे करूं। विष्णु सोचने लगे और बहुत सोचने के बाद कहा कि मैं तुम्हारा फैसला तो नहीं कर सकता लेकिन एक राय ज़रूर दूंगा। इसके ऊपर शक्ति बोली ये विष्णु आपने तो कहा था कि ये मेरा साथी होगा लेकिन ये तो मानते ही नहीं है। तो विष्णु ने कहा हे शक्ति ये भगवान शिव है इन्होंने अभी संसार की रचना करनी है ये अभी विवाह नहीं करेंगे। संसार की रचना हो जाने के बाद आप किसी मानव जाति के घर में जन्म लेना उसके बाद शिव जी आपसे विवाह कर सकते हैं। इस बात को उन दोनों ने स्वीकार कर दिया। तब भगवान शिव सृष्टि की रचना के बारे में साचने लगे और इस सृष्टि की रचना की। ऊपर की ओर स्वर्ग लोक नीचे की ओर पाताल लोक और बीच में मृत्युमण्डल (धरती) का निर्माण किया। तत्पश्चात मानव और अन्य जीव–जन्तुओं (माणु–माया) की रचना की गई। उस समय इस संसार में अर्थात धरती पर राजा हिमाचली हुए। राजा हिमाचल के घर पर एक कन्या ने जन्म लिया जिसका नाम ''गोरजा क्वारी'' रखा गया। भगवान शिव तो अटल थे लेकिन शक्ति ने मरने के उपरान्त फिर से राजा हिमाचली के घर में गोरजा क्वारी नाम से जन्म लिया। गोरजा क्वारी ने फिर से भगवान शिव को पाने के लिए तपस्या शुरू की और शिव ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उससे विवाह कर लिया।

इसके पश्चात् राजा हिमाचली ने इस सुन्दर सृष्टि की रचना और मानव जाति के निर्माण से प्रसन्न होकर एक जग (यज्ञ) का आयोजन करने का निर्णय लिया, जिसमें सभी देवताओं, मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों को आमन्त्रित किया गया। साथ–साथ अपनी बेटी गोरजा क्वारी को भी इस यज्ञ में आने के लिए निमन्त्राण भेजा गया लेकिन भगवान शिव को इस यज्ञ में आने का निमन्त्राण नहीं दिया गया। गोरजा क्वारी यज्ञ में शमिल होने के लिए शिव को भी कहतीं है लेकिन शिव ने आने से इन्कार कर दिया, कहा कि जब मुझे आमन्त्रित ही नहीं किया गया है तो मैं कैसे आऊँ। राजा हिमाचली को अपने ऊपर बहुत ही अभिमान था। सोचा कि शिव तो मेरी बेटी के साथ अपने आप ही आ जाएंगे। लेकिन शिव नहीं गए। शिव ने गोरजा क्वारी से कहा कि आपको निमन्त्राण दिया है तो आप चले जाओ और यज्ञ में शमिल हो जाओ। यह सुनकर गोरजा क्वारी अपने पिता जी के घर यज्ञ में शामिल होने चली गई। जैसे ही वह अपने पिता के घर पहुँची वैसे ही अपने पिता से कहने लगी कि आपने मेरे स्वामी शिव को क्यों आमन्त्रित नहीं किया। आपको पता है यदि आप उन्हें बुलाते तो वो आपको क्या–क्या नहीं देते। इस पर उस घमण्डी राजा ने कहा कि मुझे लगा वो आपके साथ ऐसे ही आ जाएगें। इस पर गोरजा क्वारी ने कहा आपने उनका नहीं मेरा भी ऐसा करके अपमान किया है और मैं ये कैसे सहन करूं। गोरजा क्वारी ने किसी की न सुनते हुए राजा के घर में जले यज्ञ कुण्ड में अपनी आहुति दे दी और जल गई।

जब ये सभी बातें भगवान शिव को पता चली तो शिव क्रोध में आकर राजा के घर पहुँचे और गोरजा क्वारी के जले हुए शव को अपने कन्धे पर डालकर चारों दिशाओं का भ्रमण शुरू कर दिया। भगवान विष्णु को जब इसकी सूचना मिली तो सोचने लगे कि अब अनर्थ होने वाला है। इसलिए भगवान विष्णु ने उस शव को शिव से अलग करना जरूरी समझा और अपना सुदर्शन चक्र छोड़कर उस शव को शिव से मुक्त कर दिया, जिसके इक्यावन टुकड़े हुए। ये टुकड़े जहां–जहां भी गिरे वहां उस नाम का शक्ति पीठ बन गया। जो आज तक विद्यमान है। इसके पश्चात् गोरजा क्वारी ने राजा पोरजापथ के घर में 'पारवती' के रूप में जन्म लिया जिसे आज तक शिव के साथ पूजा जाता है।

इसके उपरान्त भगवान विष्णु सोचने लगे कि जो हुआ वो तो हो गया अब आगे चलकर दान–पून किसे दिया जाए। ऐसा सोचते हुए विष्णु ने अपनी नाभी से एक बेल पैदा की और उस बेल में दूसरी दिशा में जाकर एक कमल का फूल सृजित हुआ और उस कमल के फूल से ब्रंह्म की उत्पति हुई।

ब्रह्म अपनी उत्पति के बाद चारों ओर देखते है कि संसार में तो कुछ भी नहीं है मैं क्या करूं, कैसे जीवन व्यतीत किया जाए। संसार में तो कोई भी नहीं है। ऐसा सोचते हुए चलते गए और चलते–चलते भगवान विष्णु के पास पहुंचे और अपने आप को सबसे बड़ा मानते हुए कहते है कि मैं तो कमल के फूल से पैदा हुआ हूँ मुझसे बड़ा इस संसार में कोई भी नहीं है। ब्रह्म को इस बात का अभिमान हो गया और विष्णु, शिव और शक्ति से पुछते है कि आप कौन है। इस पर विष्णु ने कहा कि आप बड़े है तो आप कहां से पैदा हुए? ब्रह्म ने कहा मैं कमल के फूल से पैदा हुआ हूँ। विष्णु ने कहा कमल कहां से पैदा हुआ? ब्रह्म ने कहा बेल से। विष्णु ने कहा बेल कहां से आई और इसकी जड़ कहां है? तो ब्रह्म बेल की जड़ ढूंढने लगे लेकिन उन्हें बेल की जड़ नहीं मिली। वह फिर से विष्णु के पास पहुंचे और कहने लगे हे विष्णु! मुझे इस बेल की जड़ नहीं मिली मैं पूरी तरह से थक चुका हूँ। आप ही बड़े है मुझे क्षमा कर दो। इस प्रकार ये तीन देव (शिव, विष्णु और ब्रंह्म) आपरूपी है।

ऊपर कहे अनुसार भगवान विष्णु के कहने पर भगवान शिव के द्वारा तीनों लोकों, मानव जाति और अन्य जीव–जन्तुओं का सृजन किया गया। विष्णु ने कहा कि धरती पर मानव जाति का होना अति आवश्यक है, नहीं तो ये धरती कमानी किसने है। तभी भगवान शिव ने सर्व प्रथम चारों वर्णों में से शुद्र जाति के लोगों का निर्माण किया। इसके पश्चात बाकी के वर्णों का निर्माण किया गया। चारों वर्णों के निर्माण के लिए चार युग लगे। सबसे पहले शुद्र जाति ने ही धरती पर खाना–पीना, रहना–सहना आरम्भ किया। पहले जो भी कार्य किये गए वो सब शुद्र जाति के लोगों के द्वारा किए गए। तब भगवान विष्णु धरती पर अवतरित हुए और लोगों से कहा कि आप खाते और कमाते तो हैं किन्तु भगवान को भी पूजते हो कि नहीं? तो लोगों ने कहा कि भगवान कहां है और कैसा है? तब भगवान विष्णु ने उन्हें एक छोटे से मिट्टी के घड़े में 'घी' डाला और उसमें फूल पतियां लगाकर दिया और कहा कि खुद खाने से पहले इसका पूजन करों, इसे मानों इसकी स्तुति करों ये तुम्हें लाभ देगा ये तुम्हारा भगवान है। तब से लोग सुबह–शाम पहले उस भगवान की पूजा–अर्चना करने लगे और बाद में खुद खाना खाते थे। भगवान की पूजा–अर्चना के साथ उन लोगों ने भगवान का गुण–गान करना भी आरम्भ कर दिया और उस समय इस ''छहाड़ी'' गायन शैली का उन लोगों के द्वारा सृजन किया गया जिसका निर्वाह आज तक किया जा रहा है।''[1]

गायन विधि

'छहाड़ी' गायन का प्रस्तुतिकरण चार या चार से अधिक छहाड़ी गायक कलाकारों द्वारा किया जाता है। जिन्हें स्थानीय भाषा में ''गैण'' कहा जाता है। इसमें एक या दो मुख्य कलाकार होते है जो कि छहाड़ी को आरम्भ करते है और बाकी उनका अनुसरण करते हैं। छहाड़ी गायन के साथ मुख्य रूप से ''ढैंकली'' (डमरू) और 'ताली' (झांझ) वाद्ययन्त्रा की संगत की जाती है और कई बार किसी धार्मिक अनुष्ठानो के अवसर पर बैंओंशी (बांसुरी) का प्रयोग भी किया जाता है। जब किसी स्थानीय देवताओं

1 श्री नाथी राम जोशी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांकः–25.12.2015

की छहाड़ी उस देवता के मेले या जातर के अवसर पर गाया जाता है तो उसके साथ उपरोक्त वाद्य यन्त्रों के साथ–साथ ढोल, धामा, करनाल, रणसींगा इत्यादि को संगत भी की जाती है।

छहाड़ी गायन शैली का प्रचलन मुख्य रूप से ज़िला शिमला के ऊपरी क्षेत्रा रामपुर बुशहर तथा अन्य साथ लगते क्षेत्रों में है। यहां पर गाई जाने वाली विभिन्न देवी–देवताओं से सम्बन्धित कुछ एक छहाड़ियां इस प्रकार हैः–

देओतण

''मेलै बेशै भौलै–भौलै देवतै, मेले बेशै भौलै–भौलै देवा देवतै।
दूओ बेश आग्नियो मशोनद्रा, चीयो बेश त्रायमूर्ती देवा देवा ना।
चौथ बेश चारा भाई चम्बू न, पांजा बेश पांजा भाई देवा पाण्डु ना।
छोये बेश छोआ भाई ऋषि न, साते बेश साता भाई देवा सूरज़ा।
आठे बेश आठा–शाठा कौंरू न, नौए बेश नौईये गा देवा रोआ ना।
दसे बेशे दशिरत पुत्रा, ग्यारे बेशे ग्यारा भाई देवा तिथिये।
बारहे बेशे बारह देओई राशीए, तेरहे बेशे तेरिए ठ देवा रूदड़ा।
चौऊदै बेशे चोऊदा कूड़ी नाग न, पन्द्रह बेशे पन्द्रह स देवा थाना ना।
सोहले बेशे सोलह सरगोपी न, सतरे बेशे सतरा गुड़ी देवा जाका ना।
ठाहरे बेशे ठाहरा कूड़ी नागा न णीये बेश डलूअ फा देवा णैका ना।
बीये बेश विष्णु नरेणा न, बीया मूको विष्णु ना देवा रेणा ना।
धोनि छेओ सूनेअ सिंघासणा , तेता मातै बैशाद देवा आपू ना।''[1]

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
पप	प	प	म	–	म	–	रे	म	म	प	म	रे	–
मेऽ	लै	ऽ	बे	ऽ	शै	ऽ	भौ	ले	ऽ	भौ	ऽ	ले	ऽ
सा	–	नि़	नि़	–	–	–	–	–	–	रे	रे	प	प
दे	ऽ	व	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ले	बै	शै
नि़	प	म	रे	–	–	–	सा	–	–	–	–	म	म
भौ	ले		भौ	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दे	बा
रे	रे	सा	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
दे	ऽ	व	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			2				0			3			

नोटः– बाकी के सारे अन्तरे इसी प्रकार से है।

भावार्थः– इस गीत में कहा जा रहा है कि स्वर्ग लोग में सभी देवी–देवताओं की एक बैठक हो रही है जिसमें सभी देवतागण भाग ले रहे हैं। इसमें कहा जा रहा है कि सभी देवी–देवता अपने क्रमानुसार बैठे

1 श्री मुन्नी लाल जी से साक्षत्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक– 19–12–2015

हुए है। दूसरे नं0 पे अग्निदेव तीसरे पे त्रायमूर्ती देव चौथे पे चम्बू.....बीसवें पे भगवान विष्णु सोने के सिंघासन पर बैठे हैं।

शिव की छहाड़

गोरक टिबै देओऐ झूंपड़े चाणै, तीऐ बिहाये देओऐ गोरजा राणे।।
गंगा माये बोसता आये, शिवे देओऐ मोगटा दे पाये।।
बाहारी बोरशे मोगटा दे फिरा–2।।
चालो महादेओ धौरतारी फेरदौ, पूर्वा दिशे आओ धोरतारी फेरेओ।।
पौच्छमी दिशे आओ धौतारी फेरेओ, दाखीणी दिशे आओ धौतारी फेरेओ।।
बांवीं दिशे आओ धौतारी फेरेअ, बैणे बोला से गोरजा राणे।।
भोलेया हींशरा ऐते की जुआड़ै, छिड़ौ लाकड़ौ नी बादनूऐं पाणै।।
भोलीऐ गोरजै सारा मेरे ना जाणे, छिड़ौ लाकड़ीय काटे पाऊ ढ़ासौ।।
बादनू पाणै इदै देऊ आणे–2।।
मोगट खोलो देओऐ गंगा भूआउऐ, कोनी आंलीऐ गंगा भूआउए।।
आपणे शिरै देओऐ गांगा भूआउऐ–2।।
शागी रौथे तीरथा बणाउंऐ, भागी रौथा नैणा कौरा धौणा।।
दौशी रौथा पूजा कौरा पाठा–2।।

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
							ग	ग	ग
							गो	र	ख
सा	रे	सा	ध	–	ग	रे	ग	ग	–
टी	बै	दे	वै	ऽ	झों	ऽ	पा	ड़े	ऽ
ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा	रे	रे	रे
चा	ऽ	णे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऐ	ऽ
सा	सा	रे	ग	ग	रे	ग	रे	सा	–
बिहा	ये	दे	वै	ऽ	गो	ऽ	र	जा	ऽ
रे^{ग}	–	णे	–	–	–	–			
रा	ऽ	णे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			
x		2			0		3		

नोटः– बाकी के सारे अन्तरे इसी प्रकार से है।

भावार्थः– यह गीत भगवान शिव से सम्बन्धित है। इस गीत में कहा जा रहा है कि गोरक नामक टिब्बे पर शिव ने झौंपड़ी का निर्माण किया है और वहां पर राणी गोरजा को व्याह कर लाए हैं और साथ ही गंगा और बसता भी आए हैं उन्हें शिव ने हमेशा के लिए अपने मुकुट में डाल दिया है। अब महादेव

धरती का भ्रमण करने निकल पड़े हैं और भगवान शिव पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, दांये और बांयें सभी दिशाओं से भ्रमण करके आते हैं और राणी गोरजा उनसे कहती है कि हे भोले यहां पर बहुत ही समस्या हो गई है न तो लकड़ी है न पानी है। शिव कहते है कि हे गोरजा तू मुझे नहीं जानती है अभी देख मैं लकड़ियां और पानी लेके आता हू तू परेशान मत होना। तभी भगवान शिव ने अपने मुकुट को खोला और वहां से गंगा को बहाया, हाथ की छोटी उंगूली से भी पानी की धारा बहने लगी और सिर से भी गंगा बहने लगी। इसके बाद शागी रथ ने तीर्थ स्थान बनाए और भागीरथ नहाना–धोना कर रहे है साथ ही दशरथ ने पूजा–पाठ करना शुरू किया।

कसैण (कंस की छहाड़)

कांसेये माण्डे जौआ गीहूंयै खोले, कांसेए राजे चीशाड़े बाखाणें।।
बैणे बोलो जो कांसा राजौ, नाहे बैहणे आणे चोकौ पाणै।।
बैणै बोलो बोंऐरा बेटे, तीदे होंदे दादूये पानैरा।।
मदनापूरा दादूये पानैरा, सूंनारी बौड़ी रूपा केरे छैयै।।
चालदे हुए बोयेंरा बेटे, हाथे किअ ओसामानी लोटौ।।
जायेअ पौड़े मोदेना पूरा, बाई ताल़ाई हेरादे लागे।।
कौटे–कौटे दादूआ पनैरा, सूंदरी बौड़े रूपा केरे छैयै।।
हेरा हेरियै पाणी गेओ शूके–2।।
पाणिये मोगरा शूकै बूआणै–2।।
रीतै लोटै घौरा ले आये, कांसेयै राजै पूछाणै लाये।।
रीतै लोटै धौरै किले आये, बैणै बोला बौयेंरा बेटे।।
दादूआ मोगरा शूकै बूआणै–2।।
बैणै बोला जो कांसौ राजौ, ऐरे बैणै झूटौ मौत बोले।।
इजरी कैड़ी बाबूयै दारोए–2।।
चालदौ हूओ जौ कांसौ राजौ–2।।
गाचीयै पाओ डांगरा केरौ बींडा–2।।
आटा शौंओ डांगरा केरौ मूखा, शाटा शौंओं डांगरा केरौ बींडा।।
जायेअ पौड़ौ मोदेनापुरा, पाणीयै मोगरा शूकै बूआणै।।
बाई तल़ाई हेड़ा लांदौ लागौ–2।।
तेता निकल़ौ दानुअ काल़ौ–2।।
कांसेऐ राजै छेदाणू लाअ–2।।
छेददा–छेददा घुण्डलु–घुण्डलु ढूबौ, छैददा–छेददा जानू–जानू ढूबौ।।
छेददा–छेददा कमरू–कमरू ढूबौ, छैददा–छेददा घोंपरू–घोंपरू ढूबौ।।
मूंडे मातै भौंयेरा काल़ौ–2।।
धारै निकल़ौ शोगाल़ी राजा, बैणै बोला शौगाल़ी राजा।।
उल्टौ कौरै डांगरा केरौ मूखा–2।।
उल्टा मूखै भौंयेरा छेदौ–2।।

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8
रे	रे	प	प	नि	प	म	रे
कां	सेयै	मां	डे	जौ	आ	गीं	हूंयै
म	रे	नि	–	प	प	म	रे
खौ	ऽ	ल़ै	ऽ	कां	सेये	रा	जै
म	रे	रे	सा	नि़	सा	–	–
ची	शा	ड़े	बा	खा	णे	ऽ	ऽ
x				0			

नोटः– बाकी के सारे अन्तरे इसी प्रकार से है।

भावार्थः– यह छहाड़ राजा कंस की है इसमें राजा कंस खल्याण में जौ और गेंहू को पशुओं की सहायता से भूसे में से बीज को अलग कर रहा है। तभी उसे ये काम करते–करते प्यास लग जाती है और वह अपनी बहन को कहता है कि हे बहन जा के मुझे शुद्ध पानी पीने को लेके आ। तभी बहन कहती है कि वहां तो पानी के लिए सोने की बाओड़ी होगी न जिसके ऊपर बड़िया छत भी लगी हुई है। इस बीच वह बहन हाथ में औसमानी लोटा लेकर पानी के लिए चल पड़ती है और मदनपुर पहुंच जाती है जहां पर बहुत सारी बाओड़ीयां इकट्ठे–2 है और वह इधर–ऊधर देखती है तभी उसे वहां पर सोने की बनी बाओड़ियां दिखाई देती है। वह वहां जाती है और देखती है कि पानी तो सूख गया है वहां पर पानी की एक भी बूंद नहीं है सारी बाओड़िया सूखी हूई है और वह खाली हाथ घर आ जाती है। कंस ने उससे पूछा कि खाली हाथ क्यों आई पानी क्यों नहीं लाया। तभी वह बहन कहती है कि वहां पानी नहीं मिला सारी बाओड़ियां सूख गई है। कंस ने उससे कहां कि देख बहन झूठ मत बोल अपने भाई से। तभी राजा कंस कमर में डांगरू का लकड़ बांधकर खुद ही वहां चल पड़। आठ फुट का डांगरू और साठ फुट की उसमें लकड़ी लगी हुई है को अपने साथ लेकर वह मदनपुर पहुंच जाता है और देखता है कि वहां पर सच्च में ही सारी बाओड़ियां सूखी हुई है। इसे देखने के बाद उसने वहां खोदना शुरू किया और खोदते–2 उस में से काला दानव निकला और कंस ने उसे उस डांगरू से छेदना शुरू कर दिया। उसे छेदते–2 वह घुटने, कमर और कंदे तक डूब गया। तभी वहां चोटी पर शोगाली नामक राजा प्रकट होता है और वह कहता है कि जब तक इस दानव का सिर नहीं छेदा जाएगा तब तक पानी नहीं निकलेगा। उसने कहा कि जो आपके पास डांगरू है उसे उल्टा करके इसे सिर को छेद दो तभी पानी निकलेगा और कंस ने वैसा ही किया और पानी निकल गया सारी बाओड़ियां पानी से भर गई। कंस ने पानी पीया और वापिस घर आ गया।

दूर्गा मां की छहाडी

धौतरी पाणी आरो सोरा माये देविए दूर्गे माईये, धौतरी पाणी आरो सौरा ना
धौतरे सौरा बौरा होआ माये देविए दूर्गे माईये, धौतरे सौरा बौरा होआ।
सौरै दानूऐं दूहाणे माये देविए दूर्गे माईये, सौरै दानूऐं दूहाणे।

धौतरी दानूऐं ज़ाऐ माये देविए दूर्गे माईये, धौतरी दानूऐं ज़ाऐ।
धौतरी दानूऐं खाए माये देविए दूर्गे माईये, धौतरी दानूऐं खाए।
देवतै खूम्बूआले चाणा माये देविए दूर्गे माईये, देवतै खूम्बूआले चाणा।
कूणा दानूऐं संगारा माये देविए दूर्गे माईये, केणा दानूऐं संगारा।
बोला विष्णु देओ माये देविए दूर्गे माईये, बोला विष्णु देओ।
बेदो भोलिया रो भीमा माये देविए दूर्गे माईये, बेदो भोलिया रो भीमा।
सोई दानूऐं संगारा माये देविए दूर्गे माईये, सोई दानूऐं संगारा।
बोला भोलिया रो भीमा माये देविए दूर्गे माईये, नहीं मेरे खाण्डौ थूरूआरा।
नहीं मेरे ओशी मोणो गोज़ा माये देविए दूर्गे माईये, बेदो कालिअ लूहारा।
चाणे ओशी मोणे गोज़ा माये देविए दूर्गे माईये, चाणो खाण्डौ थूरूआरा।
ओरा दानूऐं संगारे माये देविए दूर्गे माईये, एका दानूओ छूटौ।
सौरगै चूड़े पौड़े चूड़े माये देविए दूर्गे माईये, सौरगै चूड़े पौड़े चूड़े।
डेणौ साता पैईताले माये देविए दूर्गे माईये, बौणौ बासाकू नागा।

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6
				म	म
				धौ	तरी
रेम	प	म	रेसा	सा	सा
पाणी	आ	रौ	सौरा	मा	ये
रेम	म	म	पम	रे	सा
देवी	ये	ऽ	दूर	गै	ऽ
सारे	रे	–	–	मम	म
माई	ये	ऽ	ऽ	धौत	री
रेम	प	म	रेसा	सा	सा
पाणी	आ	रौ	सौरा	मा	ये
सा	–	–	–		
ना	ऽ	ऽ	ऽ		
x			0		

नोटः– बाकी के सारे अन्तरे इसी प्रकार से है।

भावार्थः– इस छहाड़ या गीत में कहा गया है कि हे मां धरती पर पानी का तालाब है जो कि चारों ओर फैल गया है और उस पानी के तालाब में दानव बसे हुए है व संसार में या धरती पर दानवों का जन्म हो गया है और उन दानवों ने धरती को चारों तरफ से खाना शुरू कर लिया है अर्थात् धरती पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर लिया है। इसी के चलते देवताओं ने बैठक बुलाई है और इस बैठक

में सभी उन दानवों के संगार के बारे में चर्चा कर रहे है कि कौन इन दानवों को इस धरती से खत्म करेगा। तभी भगवान विष्णु कहते है कि भीम को आमन्त्रित किया जाए और वही इन दानवों को इस धरती से खत्म कर सकता है। तभी भीम का आगमन होता है और कहता है कि हे मां मेरे पास इन दानवों को मारने के लिए कोई भी अस्त्र–शस्त्र नहीं है मैं कैसे इन्हें मार सकता हूँ। सभी देवताओं ने सोचा कि बात तो सही है तभी कालिया नमक लूहार को बुलाया गया और उसने अस्त्र–शस्त्रों को बनाया जिसके माध्यम से भीम ने सभी दानवों का संगार किया लेकिन एक दानव बच निकला। तभी सवर्ग लोक में बात चली कि अब क्या करे एक दानव तो बच निकला है इसी बीच सभी कहने लगे कि चलो बच गया तो ठीक है इसे पाताल लोक मे भेज देते है और उसे पाताल लोक में भेज दिया और वह बासकू नाग के नाम से वहां रहने लगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. रूप शर्मा, हिमाचल प्रदेश अन्धकार से प्रकाश की ओर, करण प्रकाशन, बलद्वाड़ा, मण्डी, हिमाचल प्रदेश, प्रथम संस्करण 2006
2. प्रेम लाल वर्मा जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांकः–20.06.2016
3. श्री नाथी राम जोशी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांकः–25.12.2015
4. श्री मुन्नी लाल जी से साक्षत्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक– 19–12–2015